ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत),03 सितंबर २०१६। आज ज्ञान सरोवर स्थित हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी संस्था , राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मलेन का मुख्य विषय था **" गौरवशाली भारत के लिए राजनीति में दिव्यता " .** इस सम्मलेन में भारत के विभिन्न प्रान्तों से बड़ी संख्या में प्रतिनिधिओं ने भाग लिया . दीप प्रज्वलित करके इस सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

आज के कार्य क्रम की अध्यक्षा ज्ञान सरोवर की निदेशक राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी ने अपना आशीर्वचन इन शब्दों में दिया . आपने कहा कि मोदी जी के सद्प्रयासों से आज भारत विषय के 10 महत्वपूर्ण देशों में से एक हो गया है. ईश्वरीय प्रयत्नों के बिना भारत को राम राज्य नहीं बना सकते . बापू ने काफी कोशिश की . मगर परिणाम हमारे सामने है . भारत में माताओं की क्या इज़्ज़त है आज ? बेटियों की क्या हालात है आज ? डेल्ही रेप और हिंसा की राजधानी बनी हुई है . फिर भी हमारी गारंटी है की एक दिन भारत विश्व पर राज्य करेगा . क्योंकि भारत ईश्वरीय ताकत के सहयोग से आज जीवन को दिव्य और शक्तिशाली बना रहा है . स्वराज्य से यानी स्वयं पर राज्य से विजय मिलेगी . काम ,क्रोध आदि विकारों पर विजय से दिव्यता आती है . राजयोग के अभ्यास से हम निर्विकारी बन रहे हैं . राजनीतिज्ञ भी ऐसा करें तो सफल हो सकते हैं .

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री सामजिक न्याय और सहकारिता विभाग थावर चंद गहलोत जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं भाव विभोर हूँ . सोचता हूँ के पहले ही आ गया होता तो कितना अच्छा होता . आज का विषय परिस्थिति की मांग है . आज दिव्यता का अभाव है राजनीती में . लोग अपनी ही संस्कृति की आलोचना कर रहे हैं . दुःख की बात है की आज भारत माता की जय कहने का विरोध हो रहा है . हम सत्यता से दूर हो गए हैं . परोपकार को भूल गए हैं . स्वार्थ में लिप्त हुए हैं .सात्य मार्ग पर होने के कारण कृष्णा ने पांडवों का साथ दिया .
राम जी ने लंका नरेश रावण का वध किया क्योंकि रावण अहंकार और विकार का प्रतिनिधि था . आज के राजनीतिज्ञों को दिव्यता अपना कर समाज कर समाज का कल्याण करना होगा . सही है की राजनीतिज्ञ दिव्य होंगे तो समाज की समस्या का समाधान जल्दी निकलेगा . अफ़सोस है की सत्ता लोलुपों ने सत्ता के लिए दिव्यता का त्याग किया और तुस्टिकरण की नीति अपनायी . देश इससे काफी पीछे चला गया .
.
कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि डॉक्टर सुब्रमनियम स्वामी जी , सांसद ,राज्य सभा ने कहा कि दिव्यता रामायण और महाभारत से सीख सकते हैं . हमें सबसे पहले अपने लक्ष्य का निर्धारण करना होगा .गाँधी के अनुसार लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधन और मार्ग भी उत्तम होना चाहिए . हमारे देश के अनेक माननीय राजा महाराजा हमेशा साधुओं सन्यासियों से मार्ग दर्शन लिया करते थे . क्योंकि साधु सन्यासी पूज्य हुआ करते थे . हमारी इसी परंपरा ने आज भी भारत को महान राष्ट्र बना कर रखा है .जन्म से कोई ब्राह्मण या शुद्र नहीं होगा - कर्म से होगा . बाद में मिलावट के द्वारा स्वरुप ख़राब किया गया . अपनी परम्पराओं का पालन करके राजनीती को दिव्या बना सकते हैं . मार्दर्शन करने वाले नहीं रहे . उनकी तलाश करनी होगी . भारत के सभी लोगों का डी एन ए समान है . हम सभी एक हैं और हमको मिल कर रहना होगा . हमारी संस्कृति हमें ऐसा ही सिखाती है . अपनी संस्कृति की पहचान सबसे जरूरी है .

राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बृज मोहन जी ने कार्य क्रम की विषय वस्तु को स्पस्ट किया . आपने कहा भारत वासी दिव्यता के मूल्य को जानते हैं . तभी राजनीती में दिव्यता की होती है . अगर हम ये जान लें की कभी भारत में राजनीती में दिव्यता थी - तो यह जरूरत बेमानी नहीं लगेति . राजनीति सबसे बड़ी सत्ता है दुनिया की . सत्ता बनी रहे उसके लिए सत्यता और दिव्यता बना कर रखनी होगी . सर्व शास्त्रों की शिरोमणि है गीता . सत्य और अहिंसा ही मूल आधार है शांति और समृद्धि का . हम जानते हैं की परमात्मा सत्य है . परमात्मा ने कहा है की हम सभी आत्मा हैं . विश्व बन्धुत्व कहा जाता है . क्योंकि सभी एक परमात्मा की संतान हैं और भाई भाई हैं . एक दूसरों को आत्म देखने और समझने से दिव्यता आती है . दिव्यता से आती है मर्याद . मर्यादा से ही संसार उत्तम

नता है .सर्व श्रेष्ठ दिव्यता प्रकट हुई है श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के द्वारा . इनके पास राज सत्ता और धर्म सत्ता एक साथ रहे हैं . फॉलो इनको करना है .

राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग की मुख्यालय संयोजक राजयोगिनी उषा बहन ने आज के अवसर पर कहा कि भारतीय संस्कृति की जड़ पातळ जितनी गहराई तक गयी हुई है . अंग्रेजों ने 200 वर्षों तक हमारी संस्कृति पर ही हमला किया और उसका स्वरुप कलुषित करने की कोशिश की . मगर विफल रहे मनोबल को बढ़ने के लिए उषा बहन ने राजयोग का अभ्यास करवाया .

माननीया सीता सिंहा जी ने कहा कि मैं यहां शिक्षा ग्रहण करने आयी हूँ . मुझे यहां काफी कुछ सीखना है . महिलाओं की उन्नति होगी तो समाज का और देश का कल्याण होगा . अच्छे कर्मों के परिणाम स्वरुप सफलता मिलती है - मेरा परिवार इसका उदाहरण है.